जयपुर-टोंक। देवड़ावास में शाश्वत यौगिक खेती के मॉडल फार्म में 'अन्न महोत्सव व परमात्म अनुभूति कक्ष' के उद्घाटन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुषमा। मंचासीन हैं राजस्थान के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, विधायक अजीत मेहता तथा अन्य।

चौपाल-हि.प्र.। राज्यसभा सदस्य व फिल्म अभिनेता राज बब्बर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता व ब्र.कु. रेनू।

दिल्ली-पांडव भवन। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश को ब्रह्माकुमारीज़ के ज्यूरिस्ट विंग की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. पुष्पा व पूर्व न्यायाधीश वी.ईश्वरैय्या,चेयरमैन,नेशनल कमीशन फॉर बैकवार्ड क्लासेज़।

मनहारी-नेपाल। 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. बालकृष्ण थापा, ग्राम विकास समिति के सेक्रेट्री पी.डी. कोइराला, ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. संगीता व अन्य।

राउरकेला-ओडिशा। स्टील प्लांट में 'स्ट्रेस फ्री लाइफ' विषय पर बताने के बाद समूह चित्र में सीनियर मैनेजर, कर्मचारीगण व ब्र.कु. स्वेता।

मालपुरा-जयपुर। भारतीय स्टेट बैंक के मैनेजर करण सिंह गहलोत को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आस्था व डॉ. आर.सी. शर्मा।

सभी धर्मों ने उस निराकार प्रकाश को ही पूजा

हमने जाना कि हिन्दू धर्म में निराकार शिव को ही सर्वोपरि माना गया है, उसी प्रकार यदि हम मुसलमान धर्म में देखें, तो वे लोग मूर्ति पूजा नहीं मानते हैं, परंतु जब वे मक्का हज यात्रा पर जाते हैं, तो वहां काबा का पवित्र पत्थर रखा है, जो निराकार है। इसके पीछे एक कहानी है। जब मुसलमान धर्म में परमात्मा के विषय को लेकर मतभेद हो गया तो कहा जाता है कि मक्का में पहले एक लाख छियासी हज़ार देवी-देवताओं की मूर्तियां थीं। लेकिन किसकी मूर्ति को मक्का में स्थापित किया जाए, इस बात को लेकर के लोगों में विवाद हो गया। लोग आपस में झगड़ा करने लगे और खून-खराबा होने लगा। उस वक्त एक आकाशवाणी हुई कि आप लड़ाई-झगड़ा मत करो और मुझे इस स्वरूप में याद करो। ऊपर से वह पवित्र पत्थर गिरा था जिसकी स्थापना मक्का में की गयी और उसी वक्त एक लाख छियासी हज़ार देवी-देवताओं की मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया। तब से लेकर आज तक इस पवित्र पत्थर की इतनी मान्यता है। इस पत्थर का नाम है `संग-ए-असवद'। मुसलमान लोग मानते हैं कि जीवन में एक बार हज यात्रा पर जाकर, इस पवित्र पत्थर का दर्शन अवश्य करना चाहिए। वहां जाकर क्या करते हैं? वे अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं। पापों का प्रायश्चित करके फिर अपनी बंदगी में एक लाईन ज़रूर कहते हैं, जिस लाईन के बिना उनका हज पूरा नहीं होता है। वह लाईन है - ``हे परवर दिगार नूरे इलाही मेरा हज कबूल हो'' तब उनका हज कबूल होता है। जिसका अर्थ है - परवर दिगार अर्थात् परमेश्वर, नूरे इलाही अर्थात् जो नूर का रूप है जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, उन्होंने उसे नूर कहा, बात तो एक ही है। ज्योति माना तेज और नूर माना भी तेज, तो बात तो एक ही हो गई। क्रिश्चन धर्म में तो कहा जाता है, जब मोसेस माउण्टेन के ऊपर गया, उसको वहाँ पत्थरों पर दो कमाण्ड्मेन्ट मिले। वहां उसको अखण्ड ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखकर मोसेस ने कहा `जेहोवा' जिसका अर्थ है सुप्रीम लाईट। इसलिए क्राइस्ट ने कभी भी अपने आप को भगवान नहीं कहा। क्राइस्ट ने हमेशा यही कहा ``गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन ऑफ गॉड'' जब उनको क्रॉस पर चढ़ा रहे थे तब भी अपनी अंतिम प्रार्थना में उसने भगवान से यही विनती की कि - हे प्रभु! आप इन्हें क्षमा कर देना, क्योंकि इन्हें पता नहीं है कि ये क्या कर रहे हैं। जिसको क्रिश्चनों ने लाईट कहा, मुसलमानों ने नूर कहा, हिन्दुओं ने ज्योति कहा वह परमात्मा एक ही है या अलग-अलग है, यह विचार करने की बात है।

आज भी विटिकन सिटी चले जाओ तो वहां जो सबसे बड़ा चर्च है, उस चर्च में परमज्योति परमेश्वर का दिव्य स्वरूप देखने को मिलता है। परम प्रकाश, प्रकाशमान स्वरूप, नूर स्वरूप देखने को मिलता है। गुरूनानक ने तो बहुत स्पष्ट शब्दों में परमात्मा की व्याख्या की है। इतना स्पष्ट किसी और ने नहीं किया ``एक ओमकार, निराकार, सत्नाम , निर्वैर, अकालमूर्त, अजोनी'' जो निराकार है, जो निर्वैर है वही सत्नाम है जिसको काल कभी नहीं खा सकता है। जो कभी किसी योनियों में नहीं आते हैं अर्थात् अजोनी हैं।

महावीर स्वामी ने किसका ध्यान किया? आज भी दीपावली के दिन, जब जैन लोग महावीर स्वामी का निर्वाण दिन मनाते हैं तब अपनी प्रार्थना में यही कहते हैं - ``आपने जिस शिवधाम को प्राप्त किया वो गति हमें भी प्राप्त हो'' तो वो शिवधाम कौन-सा है, वो शिव कौन है? जिसको उन्होंने कहा शिव, शिलापति सर्व श्रेष्ठ कहा है। उस गति को प्राप्त करने के लिए जीवन के रहस्य में तीन बिन्दु बताए - ज्ञान, दर्शन और चरित्र। यही सच्ची तपस्या है, जिसके आधार पर उस श्रेष्ठ गति को प्राप्त कर सकते हैं। इसी तरह महात्मा बुद्ध ने कभी मूर्ति पूजा की ओर प्रेरित नहीं किया लेकिन आज भी जापान में चले जाओ तो वहां तीन फुट की ऊँचाई पर और तीन फुट दूर बैठ करके एक थाली में लाल पत्थर रखा जाता है, और उसपर ध्यान लगाया जाता है, जिसको कहते हैं, करनि का पवित्र पत्थर। उसका नाम है ``चिंकोनसेकी'' अर्थात शांति का दाता।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

समय के साथ प्रभावी ढ़ंग... - पेज 4 का शेष

तैयार हैं?

आज की तारीख में परिवर्तन ही असली खेल का नाम है और जिसने इस खेल में निपुणता हासिल कर ली वह अपने जीवन में असीमित प्रगति करता जाएगा। इसलिए हमें यह स्वर्ण सिद्धांत का स्मरण रहना चाहिए कि जिसने समय की कीमत है समझी, समय ने भी उसकी सदा लाज रखी। अर्थात् सही समय की परख करके फिर परिवर्तन करना यह एक समझदार और सुलझे हुए व्यक्ति की पहचान है। याद रखें! एक अत्यंत प्रतिस्पर्धी दुनिया में किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए कोई गुंजाइश नहीं होती, इसलिए प्रभावी रूप से परिवर्तन का प्रबंधन न कर पाने की काफी बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ सकती है। अतः जो लोग परिवर्तन का प्रभावी प्रबंधन नहीं कर पाते हैं, वे न सिर्फ अपने काम के मामले में अपितु समाज में अपनी सार्थक भागीदारी के मामले में भी, बेमानी हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में फिर जीवित रहने के लिए एक ही रास्ता है और वह है पूरे मन से परिवर्तन की प्रक्रिया में सम्मिलित होना और उसका आनंद उठाना। तो आइए, हम सभी परिवर्तन प्रबंधन की श्रेष्ठ कला को धारण करें और सभी अनिश्चितताओं के बीच खुशी एवं शांति से भरा जीवन व्यतीत करें।

शांतिवन। 36वें `अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' में एकजुट हुए देश भर के लगभग तीन हज़ार प्रतिभाशाली बच्चे।